Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

राष्ट्रीय मूल्यों में अध्यापक की भूमिका

दीपक कुमार पाठक
शोधछात्र, शिक्षा शास्त्र विभाग,
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली,भारत।

Article Info
Volume 4 Issue 3
Page Number: 41-44

Publication Issue :
May-June-2021

Article History
Accepted : 20 June 2021
Published : 30 June 2021

शोध सारंश – राष्ट्रीय मूल्य प्रत्येक नागरिक को अपने देश के प्रति कर्तव्य बोध कराता है जिससे उसे अपने राष्ट्र के प्रति राष्ट्र प्रेम का भाव उत्पन्न हो और जो हमारे राष्ट्र के लिए प्रगति का मार्ग प्रसस्त करता है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपने राष्ट्र को संबोधित करते हुए एक संदेश दिया था – "हमें अपने देश की नवजात स्वतंत्रता को सफल बनाना और सुरक्षित रखना अपना सर्वप्रथम कर्तव्य रखना चाहिए। यदि हम अपने समूह, अपने राज्य, अपनी भाषा या अपनी जाति के समान किसी, अन्य बात को महत्व देंगे और अपने देश को भूल जाएंगे, तो हमारा विनाश अवश्यम्भावी है। इन बातों का हमारे जीवन में उचित स्थान होना चाहिए, परन्तु यदि हम इनको अपने देश से अधिक महत्व देंगे तो हमारा अंत अवश्य है। राष्ट्रीय मूल्यों की भावना एक सच्चे समाज सेवक को राष्ट्र के उत्थान के लिए अपना सब कुछ अर्पित करने की प्रेरणा देती है। इस भावना से अभिभूत होकर एक सच्चा देश का सिपाही अपने देश की रक्षा के लिए अपना बलिदान देने के लिए हमेशा तैयार रहता है। हमारा राष्ट्र, भाषावाद, क्षेत्रवाद और संकीर्ण मानसिकता से प्रेरित होकर अपने देश की अखण्डता के लिए खतरा बना हुआ है। देश के निवासियों, राजनेताओं, समाजनेताओं को अपने देश की अखण्डता व एकता से पहले अपने नितान्त व्यक्तित्व स्वार्थ आने लगे है जो देश की राष्ट्रीय मूल्यों के लिए खतरा बनते जा रहे है। राष्ट्रीय मूल्य और राष्ट्र के प्रति भाव बनाए रखना आज की आवश्यकता बन गई है। हमारे अध्यापक वर्ग, समाज नेताओं व राजनेताओं को इसमें पूर्ण योगदान देना चाहिए और संकीर्णता की भावना को त्याग देना चाहिए। तभी देश की आवश्यकता व एकता बनी रहेगी और खतरा दूर किया जा सकता है क्योंकि आज संपूर्ण विश्व राष्ट्रीय मूल्यों पर निर्भर है।

मुख्यशब्द– राष्ट्रीय, मूल्य, अध्यापक, समाज, क्षेत्रवाद।

भूमिका – हमारे जीवन में मूल्यों का अमूल्य स्थान है। किसी समाज व राष्ट्र का निर्माण के लिए हमें एक व्यापक दृष्टि की जरूरत होती है। शिक्षा वह है जो विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान के अलावा नयी चीजें, सोचने समझने को प्रेरित करें, जो उन्हें जाति धर्म के भेदभाव से दूर करें, भाईचारा बढ़ाएं, महिलाओं के प्रति सम्मान तथा निर्धर व बेसहारा लोगों के प्रति सहानुभूति व मदद की भावना पैदा करें। विवेकानन्द जी ने भी कहा था – हम ऐसी शिक्षा चाहते है, जिससे चरित्र का निर्माण

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

को, मन की शक्ति में वृद्धि हो, बुद्धि का विस्तार हो और जिसमें व्यक्ति अपने पावों पर खड़ा हो सकें, वास्तविक शिक्षा वह नहीं जो कक्षा में शिक्षक के व्याख्यान से शुरू हो और उसी पर खत्म हो, अपितु जिसमें विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता हो।

प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन कुछ मूल्यों के आधार पर ही जीता है। राष्ट्र के प्रति अध्यापकों में राष्ट्रीय मूल्यों से समाज व राष्ट्र के प्रति भावी जीवन में व्यक्ति निर्माण मूल्यों के आधार पर विकसित किया जा सकें।

राष्ट्रीय मूल्य- राष्ट्रीय मूल्य जो राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी का भाव बतलाती है, जिसमें मनुष्य अपनी भावनाओं, कर्म, व्यवहारों से समाज को व्यवस्थित बनाये रखने में हमेशा तत्पर हो जिसमें नैतिक मूल्यों के आधार पर राष्ट्रीय मूल्यों से राष्ट्र निर्माण हो सके।

हम जो करते है उसके लिए हमारे कोर मूल्य उन सभी के लिए दिशा आलोकित करते है और हमारे निष्पादन को निर्धारण करने के लिए हमें नयी दिशा देते है। राष्ट्रीय मूल्यों में कर्तव्य पालन, सदाचार, शिष्टव्यवहार, ईमानदारी, परोपकार, सेवा, त्याग, बलिदान, सत्यनिष्ठा, व्यवस्था के प्रति आदर आदि को लिया जा सकता है। एक ही समाज में विभिन्न कालों में नैतिक संहिता भी बदल जाती है। राष्ट्रीय मूल्य वास्तव में ऐसी सामाजिक अवधारणा है जिसका मूल्यांकन किया जा सकता है। यह कर्तव्य की आंतरिक भावना और उन आचरण के प्रतिमानों का संबंधित रूप है जिससे आधार पर सत्य, असत्य, अच्छा–बुरा, उचित–अनुचित का निर्णय किया जा सकता है, और वह विवेक के बल से संचालित होती है। इन मूल्यों पर चलकर एक सुदृढ़ सभ्य और स्वस्थ समाज की रचना की जा सकती है। देश की सबसे बड़ी शैक्षिक संस्था राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एक प्रशिखण परिषद के द्वारा उन मूल्यों की एक सूची तैयार की गयी है जो व्यक्ति में राष्ट्रीय मूल्यों के परिचायक हो सकते है। इस सूची में 84 मूल्यों को सम्मिलित किया गया है।

राष्ट्रीय मूल्यों में अध्यापक की भूमिका

यह सच ही कहा गया है कि राष्ट्र को शक्तिशाली व पूर्ण आत्मनिर्भर बनाने के लिए राष्ट्रीयता की भावना अतिआवश्यक है। परन्तु यह राष्ट्रीयता की भावना केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक वर्ग ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। राष्ट्रीय मूल्यों की भावनाओं को जाग्रत करने के लिए शिक्षक या अध्यापक की निम्नलिखित भूमिका होनी चाहिए –

1. पूर्ण आस्था - अध्यापक की भावनात्मक व राष्ट्रीय मूल्या के लिए विचार एवं दर्शन में पूर्ण आस्था होनी चाहिए, तभी अपने विद्यार्थियों में इस भावना का विकास कर सकता है। अध्यापक ही राष्ट्रीय मूल्यों की भावना को बच्चों में विकसित करता है।

2. उचित वातावरण तैयार करना – अध्यापक विद्यालय में एक अच्छा व उचित वातावरण तैयार करता है जिससे विद्यार्थियों में प्रेम व देश भक्ति विकसित होती है तथा घृणा व कुदृष्टिकोण की समाप्ति होती है।

3. नैतिक कर्तव्य – एक अध्यापक अपने विद्यार्थियों को नैतिक कर्तव्यों का पाठ पढ़ाता है जिसके माध्यम से वह विद्यार्थियों के हितों में देश भक्ति व देशप्रेम का दीपक जलाता है।

4. आदर्श - अध्यापक हमेशा अपने विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श होता है, इसलिए अध्यापक को स्वयं एक आदर्श बनना चाहिए तथा विद्यार्थियों को आदर्श बनाकर प्रेम, भक्ति, स्नेह का पाठ पढ़ाना चाहिए। इस प्रकार अध्यापक वर्ग एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है और कर रहा है।

5. जीवन दर्शन - अध्यापक के जीवन दर्शन का विद्यार्थियों के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। अध्यापक के जीवन दर्शन में शब्द, प्रेम, राष्ट्रीय एकता व भावनात्मक एकता की झलक दिखाई देनी चाहिए। बच्चों के ऊपर इस दर्शन का प्रभाव प्रेम व एकता के प्रभाव के रूप में दिखाई पड़ता है।

6. महत्वपूर्ण दिवसों को मानना – विद्यालयों व महाविद्यालयों में महत्वपूर्ण दिवस जैसे स्वतंत्रता दिवस, शहीदी दिवस, बाल दिवस, महावीर जयंती, दीवाली, होली, दशहरा, रविदास जयंती व युवादिवसों का आयोजन दिया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में प्रेम व राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास होता है।

7. संकीर्णता से ऊपर उठाना – अध्यापक का जीवन उदार होना चाहिए तथा संकीर्णता का नामोनिशान अध्यापक के जीवन में नहीं होना चाहिए। उदार अध्यापक अपने विद्यार्थियों को उदार बनाते है। संकीर्णता को दूर करके, अच्छे विचारों से विद्यार्थियों के जीवन को शुद्ध बनाते है जिससे प्रेम व भाईचारे की भावना उत्पन्न होती है तथा राष्ट्रीय एकता व राष्ट्रीय प्रेम की भावना भी जागृत होती है।

8. धार्मिक सहिष्णुता – धार्मिक सहिष्णुता का पाठ केवल अध्यापक ही बच्चों को पढ़ा सकता है। धार्मिक सहिष्णुता का पाठ पढ़ाकर अध्यापक विद्यार्थियों को सभी धर्मो का आदर करना व अपनी इच्छा से किसी धर्म को अपनाकर देश के हित को धर्म से ऊपर मानना आदि का उद्देश्य एक अध्यापक अपने विद्यार्थियों को देता है। इससे विद्यार्थियों में राष्ट्रीय भावना की जागृति होती है तथा उसका विकास होता है।

9. देश प्रेम की भावना – देश प्रेम की भावना का अपने विद्यार्थियों में विकास करना एक अच्छे अध्यापक का कर्तव्य है। अध्यापक को ही देश के निर्माता की संज्ञा दी गई है। अध्यापक अपने बच्चों में अपने व्यक्तित्व व क्रियाकलापों द्वारा देश की आवाज पैदा करता है।

10. महान पुरूषों की कहानियों द्वारा राष्ट्रीयता की भावना – अध्यापक अपने बच्चों को महान पुरूषों, जैसे – महात्मा गांधी, राजेन्द्र प्रसाद, लाला लाजपतराय, शहीद भगत सिंह, राजगुरू तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई, सुखदेव, लाल बहादुर शास्त्री, सुभाषचन्द्र बोस, भीमराव अम्बेडकर आदि महान नायकों की कहानियों को सुनाकर देश भक्ति व देशप्रेम की भावना जागृत करता है।

11. उचित शिक्षा – अध्यापक अपने विद्यार्थियों को बिना किसी जातिवाद, धर्मवाद, रंगभेद, सम्प्रदायों या राज्यों के भेदभाव को भूलकर उचित शिक्षा देकर व सभी के साथ मेल मिलाप करने के बाद एकता का पाठ पढ़ाता है। उचित शिक्षा के माध्यम से ही अध्यापक विद्यार्थियों को राष्ट्रीय मूल्यों में बांधने का कार्य करता है।

12. राष्ट्र गान व शपथ - अध्यापक प्रत्येक दिन स्कूल में पढ़ाई करने से पहले विद्यार्थियों को शपथ प्रदान करके राष्ट्र गान करवाता है। इससे विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न होती है।

13. देश के पहलुओं का ज्ञान – देश में चल रही शिक्षा के पाठ्यक्रम में देश के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है जिसको हमारे अध्यापक वर्ग उदाहरण देकर समझाते है। इस कारण विद्यार्थी देश के हर पहलुओं की जानकारी हासिल करते है और उनमें देश के प्रति प्रेम व भक्ति की भावना उत्पन्न होती है।

सुझाव

अध्यापक को राष्ट्रीय मूल्यों का पाठ पढ़ाने के लिए और कार्य करने चाहिए जिनका विवरण निम्नवत है –

1. बालकों को भारत के आर्थिक विकास करवाना चाहिए।
2. राष्ट्रीय एकता के संबंध में महान पुरूषों के जीवन पर भाषण करवाने चाहिए।
3. क्षेत्र भाषा के अतिरिक्त अध्यापक को राष्ट्रीय भाषा पर बल देना चाहिए।
4. बालकों को भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का वर्णन करवाना चाहिए।

5. पाठ्यक्रम में लोकगीत व कहानियों को भी स्थान देना चाहिए।
6. बालकों में राष्ट्रीय चेतना का विकास करना चाहिए।
7. बालकों को धर्म निरपेक्षता का पाठ पढ़ाना चाहिए।
8. विद्यार्थियों को देश के महान नायकों के जीवन का परिचय देना चाहिए।
9. विद्यालयों में राष्ट्रीय मूल्यों के संदर्भ में सेमिनार, नाटक व प्रदर्शनियों का आयोजन करवाना चाहिए।

निष्कर्ष - हमारा देश क्षेत्रवाद, भाषावाद जैसी मानसिकता से प्रेरित होकर अपने देश की अखण्डता को तोड़ने में लगा है। इसका राजनैतिक ढांचा पूरी तरह इतना बदल चुका है कि राजनेताओं का अपने देश की अखण्डता व एकता व मूल्यों से पहले अपने व्यक्तित्व स्वार्थ आने लगे है जो राष्ट्रीय मूल्यों के लिए खतरा बनते जा रहे है। पहले तो सभी मिलकर स्वतंत्रता की मांग करते थे लेकिन अब एक राज्य दूसरे राज्य से लड़ रहा है। यह घटिया सोच भारत की राष्ट्रीय मूल्यों के लिए सबसे बड़ा खतरा है। आज तो देश में राष्ट्रीय मूल्यों के माध्यम से विद्यार्थियों में अध्यापकों के माध्यम से देश की अखण्डता और एकता को बनाए रखने के लिए व उसको दिनोदिन विकास की राह पर लाने के लिए राष्ट्रीयता की भावना जागृत व विकसित करनी चाहिए। इससे वे राष्ट्रीय हित को अपने व्यक्तिगत हित से ज्यादा व महत्वपूर्ण समझेंगे, अर्थात् राष्ट्रीय हित को महत्वपूर्ण स्थान देंगे।

संदर्भ

1. वर्मा, सरोजवाला, चोपड़ा प्रियंका, विद्यालय प्रबंधन, नई दिल्ली, हितैशी पब्लिशर।
2. गुप्ता, महावीर प्रसाद व वाजपेई प्रमोद कुमार, शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, नई दिल्ली: मार्डन पब्लिकेशन।
3. मोनिका, सामाजिक अध्ययन का शिक्षण जालंधर, मार्डन पब्लिशर।
4. बालिया, जे.एक. सामाजिक अध्ययन शिक्षण जालंधर, पौदल पब्लिशर।